

॥ श्रीसुदर्शनकवचम् २ ॥

.. shrI sudarshana kavacha 2 ..

sanskritdocuments.org

May 21, 2017

.. shrI sudarshana kavacha 2 ..

॥ श्रीसुदर्शनकवचम् २ ॥

Sanskrit Document Information



Text title : sudarshanakavacham 2

File name : sudarshanakavacha2.itx

Category : kavacha

Location : doc_deities_misc

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : Dinesh Agarwal dinesh.garghouse at gmail.com

Proofread by : Dinesh Agarwal dinesh.garghouse at gmail.com, PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

Source : <http://archive.org/details/HindiBook-danikPrarthnastrotakavach> printed pages 66-67

Latest update : July 31, 2013

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

May 21, 2017

sanskritdocuments.org



॥ श्रीसुदर्शनकवचम् २ ॥

ऊपरी बाधा, अला-बला, भूत, भूतिनी, यक्षिणी, प्रेतिनी
किसी भी तरह की ओपरी विपत्ति में सुदर्शन कवच रक्षा
करता है । यह अद्वितीय तान्त्रिक शक्ति से युक्त है ।
अतः सुदर्शनचक्र की भान्ति पाठक की सदैव रक्षा करता है ।

ॐ अस्य श्री सुदर्शन कवच महामन्त्रस्य नारायण ऋषिः
श्री सुदर्शनो देवता, गायत्री छन्दः दृष्टं दारय
इति कीलकम् । हन हन द्विषय इति बीजम् , सर्वशत्रुक्षयार्थं
सुदर्शन स्तोत्रपाठे विनियोगः ॥ १ ॥

अथ न्यासः

ॐ नारायण ऋषये नमः शिरसे स्वाहा ।
ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ दुष्टं दारय दारयेति कीलकाय नमः हृदये कवचाय हुम् ।
ॐ हां हीं हूं द्विष इति बीजम् गुह्ये शिखायै वषट् ।
ॐ सुदर्शन ज्वलत्पावकसङ्काशेति कीलकाय सर्वाङ्गे
अस्त्राय फट् इति ऋष्यादि ।

पश्चान्मूलमन्त्रेण न्यासध्यानं कुर्यात् ॥ २ ॥

अथ मूलमन्त्रः

ॐ हां हीं नमो भगवते भो भो सुदर्शनचक्र
दुष्टं दारय दारय दुरितं हन हन पापं मथ
मथ आरोग्यं कुरु कुरु हुं हुं फट् स्वाहा ।
अनेन मूलमन्त्रेण पुरश्चरणं कृत्वा
तदा आयुधसान्निध्यं भवति भवति ॥ ३ ॥

अथ शत्रुनाशन प्रयोगमन्त्रः

ॐ हीं हीं हूं सुदर्शनचक्रराजन् दुष्टान्
दह दह सर्वदुष्टान् भयं कुरु कुरु विदारय
विदारय परमन्त्रान् ग्रासय ग्रासय भक्षय
भक्षय द्रावय द्रावय हुं हुं फट् ॥ ४ ॥

अथ मोहनमन्त्रः

ॐ हुं हन हन हां हां हन हन ओङ्कार
हन हन ओं ह्रीं सुदर्शनचक्र सर्वजनवश्यं
कुरु कुरु ठः हा ठः ठः स्वाहा ॥ ५ ॥

अथ लक्ष्मीप्राप्ति प्रयोगमन्त्रः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं हां हां सुदर्शनचक्र
ममगृहे अष्टसिद्धिं कुरु कुरु ऐं क्लीं स्वाहा ॥ ६ ॥

अथ आकर्षण प्रयोगमन्त्रः

ॐ हां ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं जम्भय जम्भय अमुकं आकर्षय
आकर्षय मम वश्यं ज्री ज्री कुरु कुरु स्वाहा ॥ ७ ॥
ॐ हां षोडशवारं पूरकं कृत्वा श्रौं हां त्रिषष्टि
वारं कुम्भकं कृत्वा ॐ हां द्वात्रिंशद्वारं रेचकं कुर्यात् ।
इति प्राणायामः ।

From <http://archive.org/details/HindiBook-danikPrarthnastotraKavach>
Encoded and proofread by Dinesh Agarwal dinesh.garghouse at
gmail.com
Proofread by PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

.. shrI sudarshana kavacha 2 ..

was typeset using Xe_{La}TeX 0.99996

on May 21, 2017

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

